172 p
659
H
MICROFILM

SV
1911

1299
10/21

891.431
V191 R

Rashtriya Geet (Vaidya ka Biraha) in Hindi
Govt. of U.P.
Imperial Record Department
Reg. 4
22.2.43

❀ वन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय--गीत

[वैद्य का बिरहा]

लेखक व प्रकाशक—

श्री पं० रामकुमार वैद्य,

इजरी, जलालपुर जौनपुर ।

मुद्रकः—

श्री पं० किशोरी शरण त्रिपाठी,

श्री केशव प्रेस, जौनपुर ।

प्रथम बार १०००] १९४० [मू० एक आना

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 659
Date 16.12.71
GOVT. OF INDIA

ईश्वर प्रार्थना ॥ कवित्त ॥ १ ॥

दासता के कीच बीच भारत निवासी फंसे,
करूणा निधान दया दृष्टि से निहारिये ।
भक्त नहीं तो नाथ भक्तों के पूत सही,
नाती निहार इ नातो न बिसारिये
सुना है सदा से तुम निर्बलों के साथ रहे
हम हैं निबल नाथ हमहूँ को तारिये ।
अर्जी हमारी आगे मर्जी तिहारी, नाथ
बात की है बात बात जीतिये कि हारिये ।

॥ कवित्त २ ॥

मुखिया मुहर्रिल मुख्तार म्युनिसपल्टी वाले,
मूजी मुज वर मारवाड़ी धन खाते ह ।
पण्डा पटवारी पेशकार औ पुलिस वाले,
पूंजी पति पन्नग समान डसि खाते हैं ।
जुल्मी जमींदार जमादार जरायन वाले,
ऊंच वाले जालिम से अति दुख पाते हैं ।
बञ्चक वैरागी बेटी बेचवा औ व्योपारी आधा,
वैद्य कहैं आधा तो विदेशी लिये जाते हैं ।

राष्ट्रीय बिरहा ॥

पहिले रोजिगारी बनि आयेनि पाछे हमसे दगा कमायेनि,
येनहीं कइलेन तोहरा देशवा खुआर ॥ टेक ॥
बनि के सौदागर रोजिगार करै आयेनि,
कांच वाली चूड़ी अपने देश से लिआयेनि ।
बेंचि २ रुपया विलायत पठवायेनि
भोले भाले रजवन से बिनती सुनायेनि ।

थोड़ी सी जमीन लेइके घर बनवायेनि ।। येनहीं० ।।
बनिके काल नेम के भाई, हमसे कइलैं दगा कमाई,
भीतर भीतरैं बनावैं हथियार ।। १ ।।

राजा नन्द कुमार के येन फांसी लटकायेनि,
मनि पुर के रजवा के बहुतै सतायेनि ।
ढाके के जोलाहन कै अङ्गूठा कटवायेनि ।
कइ २ के जुरमाना खूब रूपया कमायेनि
वैद्य कहैं बङ्गाल से तब आगे कदम बढ़ायेनि । येनहीं ।
कैसे लगै न घाटे नइया, जब मोर घरहीं क खेवैया,
मीरजाफर के बनायेनि पतवार । २ ।।

शाहा बहादुर के सपूतै मर वायेनि,
वाजिद अली शाह कै केवाड़ा तोड़वायेनि ।
बूढ़ी आसुफ़दौला मां कै गहना चोरायेनि,
राजा दलीप के बिलायत पठवायेनि,
अन्हरी मतारी के येन भिखिया मगायेनि ।। येन०ीं ।।
बनिके उलूक घर में अगिया लगायेनि,
आधी रतियां को भयल हो जरि के छार ।। ३ ।।

लक्ष्मी बाइ पर बार पीछे से चलायेनि,
नाना की बेटी मैना को जिअतै जलायेनि,
अजनाले में चालिस गज़ कै कुआं खोद वायेनि,
काटि २ मुड़िया मुहें लै पटवयेनि ।
बिनहीं कसूर कितने फांसी पर चढ़ायेनि । एनही० ।
घरही कै भैया हमरे होइ गये बिभीषण,
अपने घरे में लुकायेनि ठगहार ।। ४ ।।

ज़िले मे कचहरी औ तहसील कइलें जारी।
थाना औ सिपाही चौकीदार पटवारी।
मुन्शी औ दारोगा से करावैं ठग हारी
मुखिया बिचारे के बनावैं सरकारी।
सरवस लेइ के तब देलेन खिताब नम्बर दरी ॥ एनहीं ॥
वैद्य कहैं तन पर कै धोतिअउ उतरववलेंन,
एनहीं बनइ के दुशाशन तालुकदार ॥ ५ ॥
एनहीं तोहरे पेटवा पर घतिया लगायेनि।
एनहीं पूजी पतिन से मोटरिया चलवायेनि
रांड़ घिसनहरिन कै पेट कटवायेनि
गांजा औ शराब अहिफेन बेंचवायेनि।
टट्टी में कै मैला बेंचेन तबौ नहीं शरमायेनि ॥ एनहीं।
माटी औ पानी आगि हवा तलक येन बेचैं
हमसे कहैं कि आपन गांव ल्य सुधार ॥ ६ ॥
येनहीं कचहरी कै जलिया बिछायेन,
अमला वकील पेशकार येन बनायेनि।
कोर्ट फीस तलबाना औ हरजाना तक दिवायेन।
सतुवा औ दाना पै टिकट लगवायेनि
वैद्य कहैं सग भाइन के बिलायत तक लड़ायेनि ॥ एनहीं ॥
लेइके तराजू अपुना बानर बनिके बइठेंन,
दोनो लड़ैं बलि बनि गैलेनि बिलार ॥ ७ ॥
अब तौ एनकर राज भैया हमै न सोधाय हो
न जोतै के बरदा मिलै न दूहै के गाय हो

सरबस बेंचि के लगान न दिआय हो
सारी चीजो पर कर लागल जियरा डेराय हो
गांधी औ जवाहर कइलेनि तोहरि सहाय हो
पन्त के मनाव ओनकरि आयू बढ़ि जाय हो
जैन के असीस केउ न मिले अइसन भाय हो
वैद्य कहैं दोनो कर जोरे बिनती सुनाय हो
ईश्वर से मनाव एनकर पवरा कहिया जाय ॥ एनहीं ॥
वोट में लड़ायेनि एनकरि दहिया न बुतानी,
एनहीं कौंसिल में करवावइ सोनर मार ॥ ८ ॥

धरती आकाश हवा आगि और पानी
दुनियां बनववलेनि ईश्वर करके मेहर बानी
चिउंटी से हाथी जेतने जगत में परानी
सब के समान अधिकार है पुरानी
जे रोकैं ते पापी बनैं बेद ने बखानी
धरती बताव केकरि महतारी बियानी
वैद्य कहैं केउ मजा करैं भोगैं परेशानी ।। एनहीं ॥
सगरिउ जमीन जमींदार के बतावैं,
तबका सरगे में बनाई गोरूआर ॥ ९ ॥

चेता अब किसानों तू बहुत दुख पाय
पेटवा भरिके रोटी भैया कबहूँ न खाय
गोड़वा बटोरे सारी रतिअइ जड़ाय
जेठ की दुपहरी में उबेनइ गोड़े धाय

एतना दुख सहि के आपन दिनवां बिताय
मिलि जइहैं स्वराज इहै ईश्वर से मनाय
वैद्य कहैं बेइमानन के अब जिनि पतिआय ॥ एनहीं ।
देशवा के कारन जेल खाने में चल्य हो
जब तक मिलै न समान अधिकार ॥ १० ॥

राष्ट्रीय बिरहा ॥ ११ ॥

कहैं भारतीय रोय हमरा सरबस लेइ गै ढोय,
जबसे होइ गइलेनि विदेशियन कइ राज ॥ टेक ॥
राजा लेइग रानी लेइग लेइग राज दुलारन के ।
पलटन फौज रिसाला लेइग लेइग घोड़ सवारन के
हीरा लाल जवाहर लेइग पत्थर कइउ हजारन के ।
सोना चांदी ताम्बा लेइगा रांगा लेइग ढारन के ।
दूध दही अन्न माखन लेइग गाय बैल सब मारन के ।
भारत के होनहार अनेकन लेइग पार उतारन के ।
वैद्य कहैं बदले में अइलिन तीनि चीज सरदारन के ।
लम्बरदारी मुखियागीरी राय सहिबी धारन के ॥ जब से हो० ॥
भारत क देशवा उजार कइके भइया,
लेइगे देवतन कइ बनावल सिर कइ ताज ॥

बिरहा ॥ १२ ॥

सुन्दर सुखद भारत भूमि हमरा देशवा रहलैं,
उहै आज हो गइलैं मुँहताज ॥ टेक ॥
नाहीं रहलेन चोर न केउ केहू के डेराय हो ।
नाहीं बेइमान नाहीं कागजइ लिखाय हो ।
यहीं क बनावल चीज दुनियां में जाय हो ।
तीन आना कै बरदा मिलैं दुइ आना कै गाय हो ।

रुपया क छ पसेरी घियना बिचाय हो।
गइया कै दूध यहां कच्चइ पर महाय हो।
खाय के कन्हैया लिहलेन पर्वत उठाय हो ॥ भैया उहै आज० ॥
कहिया तोहरी मटिया बिलइहैं अंगरेजवा,
देशवा फेर हमरा हो जइहैं आजाद ॥

बिरहा ॥ १३ ॥

कहँवा गंववला अपने कान्धे कै कमनियां भैया,
कहंवा गंवाय तू कृपाण ॥
तुही बने थे राम कृष्ण तु हनुमत के रफ्तार बने।
तुही बने थे पार्थ वीर तु कर्ण समान उदार बने।
तुही कुम्भज तू कपिल बने तुही परशुराम औतार बने।
तुही कन्ध तू पृथ्वीराज, तू शब्द वेध के वार बने।
तुही बप्पा रावल सांगा तू उदयसिंह सरदार बने।
तुही जयमल बने तुही फत्ता तू प्रताप के हथियार बने।
तुही भामाशाह प्रताप सिंह की नइया के पतवार बने।
वैद्य कहैं तू विदेशियों के गुलाम दावेदार बने ॥ भैया कहंवा० ॥
भारत कै बगिया विदेशिया उजारेनि,
तोहरे जियतै मेहरिया भइलीं राड़ ॥

विरहा ॥ १४ ॥

तुहईं अश्वमेध तुहईं राजसूय कइल्य,

तोहरे खाये क अब न रहा समान ॥ टेक ॥

तुही बने थे पृथवीपति तुम्ही चक्रवर्ति कहलाये हो।

न गति रुकी विदेशों में जब हाथ कृपाण उठाये हो।

देश २ के भूपति अपनी कन्या लेकर आये हो।

अर्जुन ब्याहे अफ्रीका में कैसे तुम्हे भुलाये हो।

गान्धारी खन्धार देश की अन्धा पति जो पाये ह।

माद्री रही पाण्डु की रानी जो इरान से लाये हो।

रही कैकेयी काश्मीर की रामहिं बने पठाये हो

वैद्य कहैं भगदत्त चीन का अर्जुन मारि गिराये हो ॥ तोहरे०।

आपन रजवा विदेशियन के दिहल्या,

तब से खुंटिअइ पर टांगलि बाय कमान

॥ इति ॥

IMPERIAL RECORD